



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**  
**(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)**

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

**अरराज प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन**

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियन्त्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या</p>

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर / 2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे—भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च—3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में आदि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0—267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ—23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ—1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ—3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग—अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्म्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अप्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम—1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आप्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेमिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरिफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ—सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ—साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज

		मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोट्ट) से बचाव के लिए पशुओं को टीक लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**  
[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**  
[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

बंजरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम

		<p>जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
सब्जियों		<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे—भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।</p>
मिर्च		<p>मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।</p>
प्याज		<p>खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 किंवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।</p>
केला		<p>केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शाकर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशासित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशासित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।</p>
आम		<p>किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्ब्बई, एलफॉन्ज़ों, ज़ड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अप्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशासित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आप्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।</p>
लीची		<p>लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे—कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे—कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मध्य, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।</p>
खरीफ प्याज		<p>प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।</p>

चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० वलोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्कियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीक लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविंद कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

ढाका प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।

- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी/पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी/पानी में छिड़काव करें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शाकर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशासित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशासित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हैमसागर, कृष्णभोग, अमन

		दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिशत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आप्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधे लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)

डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14 /AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

### केसरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा दिवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पाटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्कित से पक्कित की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों से गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशासित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 विवर्टल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर विहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा,

		बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुटियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफाँन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिशत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरिफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैताली स दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)





**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**

**(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)**

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

**कोटवा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन**

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाकलोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाकलोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पाटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्कित से पक्कित की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
सब्जियों		<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।</p>
मिर्च		<p>मिर्च का बीज उथली क्यारियों से गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का</p>

		लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 किवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगडा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिष्ट, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफॉन्स दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिषेकण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
9473000861

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
9368411887

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**  
**(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)**

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

**पहाड़पुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन**

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियन्त्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या</p>

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर / 2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे—भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 किवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्बाई, एलफॉन्जो, जङ्डालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधे लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिषेक		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**
- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।  धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के

		अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-२६७ अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150–200 विवंतल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहित, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा, राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेप्टेंड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० वलोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।

फल परिक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**  
[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**  
[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

चिरैया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी 10 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पाटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 सेमी 10 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों से गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्रिन रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 विवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्ब्झ, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अप्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आप्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।

खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**  
**(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)**

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

**मधुबन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन**

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।

- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी/पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी/पानी में छिड़काव करें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों से गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 विवर्टल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्बाई, एलफाँच्जाँ, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिशत, चौसा, कतिकी हैं। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण,

		मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेंटेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जाएगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 1 क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोटा) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**  
**(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)**

चकिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिनग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पू०सा॒समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पू०सा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पू०सा ज्वाला, पू०सा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशासित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशासित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा

		सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग—अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगडा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिशत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम—1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेमिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राइस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोट) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन वीं एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**  
**(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)**

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

**छोरादाना प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन**

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियन्त्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या</p>

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर / 2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे—भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 किवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्म्बई, एलफॉन्जो, जङ्डालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधे लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिषेक		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

अदापुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सर्वैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।  धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी 0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो

		फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किसमें बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्कित से पक्कित की दूरी 60 सेमी 0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचाँस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों से गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किसमें अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किलोटन प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किसमों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किसमों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किसमें बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किसमें कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किसमों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किसमें मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किसमें लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किसमें फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किसमें समरवहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किसमों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेन्द्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किसम की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किसमें जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किसमें जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किसमें जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं

		को हरे चारे के साथ—साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक कवार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30

		किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।
		धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किंवंदल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शाकर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह से पकने वाली किस्में लंगडा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राइस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं

		के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 वलोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारू पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीक लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**  
[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**  
[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

कल्याणपुर प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।

- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूर्वा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घण्टा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के बत्त खेत में एक सेमी/पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्कित से पक्कित की दूरी 60 सेमी/पानी रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूपक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पत प्रति 3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 विवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्बाई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिशत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेन्द्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।

लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लॉगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्गलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

मेहसी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

## ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्कित से पक्कित की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूपक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
सब्जियों		<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।</p>
मिर्च		<p>मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशंसित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।</p>
प्याज		<p>खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 विवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।</p>
केला		<p>केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।</p>

आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग—अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह से पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफाँजों, जड़दालू, जून माह से पकने वाली किस्में लंगडा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिशत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम—1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आद्रेगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखयों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोट) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र



## पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)

डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

मोतिहारी, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

### ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्कित से पक्कित की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
सब्जियों		<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-मिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।</p>
मिर्च		<p>मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व</p>

		थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150–200 विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुटियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफाँन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा, राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेप्टेंड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिघड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेमिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 वलोरपाइरोफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोट्ट) से बचाव के लिए पशुओं को टीक लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**

**(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)**

**रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी**

**दिनांक 26.07.2019**

**पताही प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन**

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियन्त्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या</p>

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर / 2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे—भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 किवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्म्बई, एलफॉन्जो, जङ्डालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधे लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिषेक		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**  
[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**  
[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26 .07.2019

रक्सौल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या</p>

		पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 किंवंदल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शाकर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशासित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशासित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगडा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशासित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों

परिष्कारण		को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारू पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविंद कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**  
[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**  
[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



### मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

संग्रामपुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
-----	--------	---

धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं—कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो गो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी 10 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 सेमी 10 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशासित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशासित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशासित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे—कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे—कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्ठी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें।

		पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेमिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राइस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

सुगौली प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के बेत खेत में एक सेमी/पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी/रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशासित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्मे

		समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मो के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अप्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आप्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्दगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधे लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)

डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



## मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 جولائی - 31 جولائی، 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

## तेतरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डाठोआरठीपीठीएठू, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
  - अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
  - सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
  - पूर्वानुमानित अवधि में मूख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घण्टा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटिलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से 0मी0 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पाटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूसी 60 से 0मी0 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूपूक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-मिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 किवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।

केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुरूपसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगडा (मालदह), हैमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिशत, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियाँ या गोइठा का धुआं करे ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक व्हार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोट) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**  
**(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)**

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

**तुरकौलिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन**

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियन्त्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या</p>

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर / 2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे—भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 किवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बर्म्बई, एलफॉन्जो, जङ्डालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधे लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिषेक		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**  
[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**  
[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

पकड़ीदयाल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या</p>

		पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।
अरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 से०मी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करेला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 किंवंदल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शाकर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशासित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशासित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगडा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशासित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे- कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे- कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्धगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों

परिष्काण		को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारू पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**  
[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**  
[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



### मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

### रामगढ़वा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
-----	--------	---

धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं—कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो गो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी 10 पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
टरहर		उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 सेमी 10 रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशासित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 विवंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशासित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशासित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
टाम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशासित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे—कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे—कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्ठी में 10 x 10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें।

		पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्दगलन (डेमिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चरा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राइस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
**पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)**  
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा**



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

घोड़ासन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटालाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के बेत खेत में एक सेमी/पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पवित्र से पवित्र की दूरी 60 सेमी/रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों में गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0-267 अनुशासित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुलाई में 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-1 अनुशंसित हैं। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जो, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में

		समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मो के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अप्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आप्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्दगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधे लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



कृषि विज्ञान केन्द्र  
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई - 31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

### हरसिद्धि प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-**

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा दिवा औसतन 10 से 15 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं-कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अग्रात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2-3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक सेमी० पानी की उपस्थिति रहनी चाहिए।</p>
अरहर		<p>उच्चास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय-13, राजेन्द्र अरहर-1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशासित हैं। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्कित से पक्कित की दूरी 60 सेमी० रखें। बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे-भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रूप से कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों से गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-267 अनुशासित हैं। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150-200 विवर्टल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर विहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा,

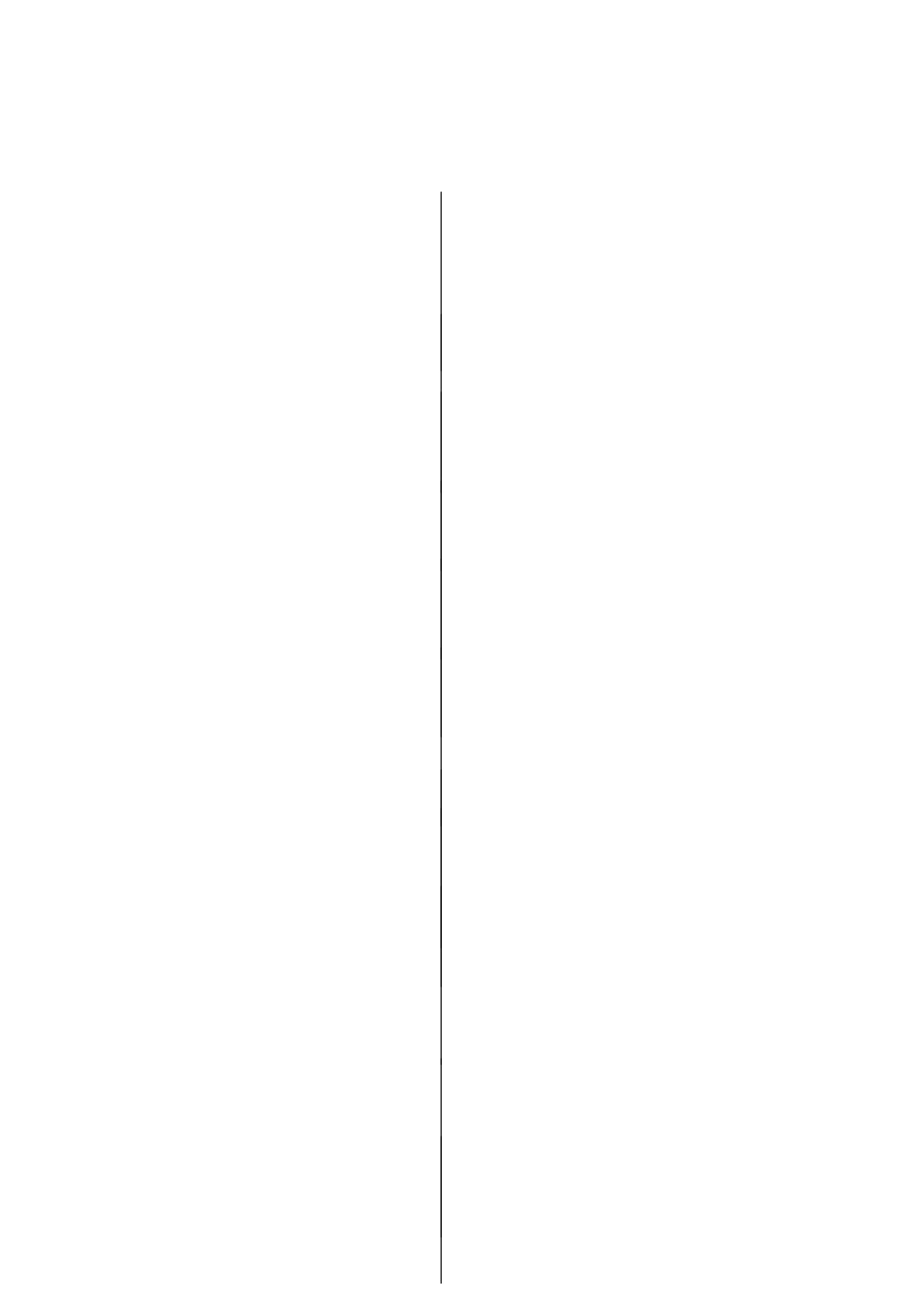
		बसराई, फिआ-1 अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोटियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित हैं। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित हैं। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को $2.5 \times 2.5$ मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे— कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बैदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे— कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरूपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में $10 \times 10$ मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढकने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 वलोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान  
**9473000861**

[head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in](mailto:head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in)

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)  
**9368411887**

[gkmseastchamparan@gmail.com](mailto:gkmseastchamparan@gmail.com)



---